Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 11 | July 2015 ISSN:- 2393-8900

Research Article

मध्यवर्ग की परिभाषा एवं स्वरूप तथा उद्‌भव एवं विकास

इसुफअल्ली महमंद शेख

शोध–छात्र–पीएच.डी. , सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर.

प्रस्तावनाः

'मध्यवर्ग' बीसवीं शताब्दी का बहुचर्चित एवं अतिपरिचित शब्द है। प्रायः यह शब्द सुनते ही हमारे मन पटल पर जो प्रतिमा बिंबित होती है, उसका सीधा संबंध समाज के उन लोगों के स्तर से होता है जो न अमीर हो, न गरीब। यह आज के अर्थ केंद्रित युग के प्रभाव का ही परिणाम है कि 'मध्यवर्ग' शब्द चर्चा का विषय हो बैठा है। आज यह शब्द सामान्यतःबीच की श्रेणी या स्तर के लोग जो न अमीर होते हैं, न गरीब के अर्थ में अधिक प्रचलित है। यह शब्द ̇अंग्रेजी शब्द श्ल्ड्डड्डथ्ढ्ढ ड़थ्ठ्ठ्ठ्ठ (मिडल क्लास) का समानार्थी है।

मध्यवर्ग की परिभाषा एवं स्वरूप :

'दि कम्पेक्ट एडिशन ऑफ दि ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी' में मध्यवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी है-''मध्यवर्ग समाज के उच्च तथा निम्नवर्ग के बीच का वर्ग है।''[१]

'चेम्बर्स ट्वेंटिथ सेंचुरी डिक्शनरी'में लिखा है-''मध्यवर्ग के अंतर्गत वे सभी व्यक्ति आते हैं, जो अभिजात्य वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के मध्य होते हैं।[२]

एनसायक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल सायन्सेज :-

''मध्यवर्ग अपनी सीमाओं में उद्योग और व्यापार के, मंझली स्थिति के उद्यमकर्ता, जैसे शिल्पी और किसान अर्थात् वस्तुओं के छोटे उत्पादक, छोटे दुकानदार और व्यापारी तथा दफ्तरों के कर्मचारियों एवं वेतनभोगी लोगों को समाविष्ट करता है।''[३]

मानक हिंदी कोशः-

''मनुष्य समाज के आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से विभाजित वर्गों (उच्च,मध्य,निम्न) में से बुध्दि प्रधान एक वर्ग जो सामान्य आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक स्थितिवाला समझा जाता है और उच्च वर्ग (धनी वर्ग) और निम्न वर्ग (श्रमिक वर्ग) के बीच में माना जाता है।[४]

हिंदी साहित्य कोशः-

"पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने समाज को इतना जटिल कर दिया है कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई, जो इस जटिल व्यवस्था के संगठन सूत्र को सँभाल सके। इस वर्ग में नौकरी पेशा, शिक्षक, क्लर्क और अन्य साधारण लोग आते हैं। मध्यवर्ग विशेषतया बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है और सामाजिक क्रांति के प्राय:समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में ही होता है।"[५]

गोविंद सदाशिव धुर्ये:-

"सामाजिक जगत् में जहाँ केवल तीन वर्गों को दृष्टिपथ में रखा जाता है, मध्यवर्ग पूंजीपतियों तथा श्रमिकों के दो चरम सीमा पर पहुँचे हुए वर्गों में केंद्रीय स्थिति रखता है और वह समाज का मुख्य प्रयोजन पूर्ण करता प्रतीत होता है।"[६]

डॉ.लाजपतराय गुप्त :-

" धनवान व्यापारी तथा उच्च सरकारी नौकरी प्राप्त व्यक्ति पूँजीपती वर्ग के अधिक निकट है और छोटे-छोटे व्यापारी तथा सरकारी सेवा में साधारण व्यक्ति जो श्रमिक वर्ग से कुल अधिक संपन्न हैं, वे व्यक्ति मध्यवर्ग में गिने जाते हैं।"[७]

भूपसिंह भूपेंद्र:-

" यह वर्ग उच्च तथा निम्नवर्ग की अपेक्षा अधिक व्यापक, संवेदनशील, प्रेरक तथा अपनी विशिष्ट दुर्बलताओं से ग्रस्त होता है।"[८]

मध्यवर्ग की दी गई उपर्युक्त सभी परिभाषाओं पर दृष्टिक्षेप करने पर हम यह कहने में समर्थ हैं कि इनमें मध्यवर्ग की एक भी परिभाषा परिपूर्ण नहीं है। मध्यवर्ग अपने आप में दिन-ब-दिन इतना जटिल बनता जा रहा है कि इसकी सर्वमान्य परिभाषा देना आसान कार्य नहीं रहा है।

क्योंकि इस वर्ग के कुछ सदस्यों को एक ओर उच्चवर्ग से रेखा खींचकर बिलकुल पृथक करना मुश्किल है तो दूसरी ओर निम्नवर्ग से इसका अंतर दिखाना भी सरल संभव नहीं है। मध्यवर्ग न किसी यंत्र से उत्पादित वस्तु है और न किसी सरकारद्वारा बनाया गया कानून। यह आधुनिक कालीन परिस्थितियों की उपज है। सामंतवादी अर्थव्यवस्था के लोप तथा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के नवोन्मेष से उच्च तथा निम्नवर्ग के बीच अधर में लटका हुआ तीसरा वर्ग उदित हुआ जिसे 'मध्यवर्ग' कहा जाता है। यह एक ऐसे लोगों की श्रेणी है, जो आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से आपस में समानता रखते हैं। वर्तमान भारतीय समाज में इसी वर्ग की तादाद बहुत बड़ी है।

मध्यवर्ग का उद्‌भव एवं विकास:

भारत में मध्यवर्ग का उद्‌भव किस तिथि को हुआ? इसका निश्चित उत्तर देना संभव नहीं है। क्यों कि समाप्त में जो कुछ नवनिर्माण होता रहता है या जो कुछ नष्ट या नवनिर्माण हुआ, वह धीरे-धीरे काल के साथ ही हुआ है। कोई निश्चित तिथिनिर्धारित कर, नारियल फोड़ औरमुहूर्त देखकर तो देश में मध्यवर्ग का उदय नहीं हुआ है। हमारे देश के इस वर्ग के विकास में अंतरराष्ट्रीय शक्तियों तथा घटनाओं का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। इंग्लैंड मेंचौदहवीं शताब्दी में ही मध्यवर्ग के उदय के संकेत मिल रहे थे। दिन प्रतिदिन वैज्ञानिक प्रगति हो रही थी। इस शताब्दी में वहाँ उदयोग में जो महान क्रांति हुई, उस ने न केवल इंग्लैंड में बल्कि सारे यूरोप में मध्यवर्ग को सामाजिक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण अंग बना दिया, इस औदयोगिक क्रांति तथा शिक्षा के प्रसार से हिसाब-किताब रखनेवालों के एक नए वर्ग का उदय हुआ। यही वर्ग मध्यवर्ग समझा जाने लगा जो कि मजदूरों से अपनी प्रतिष्ठा ऊँची समझता था। सन१७८९में राजा-रानी के मनमाने राजकारोबार और लोकव्यवहार से तंग आकर फ्रांस के लोगों ने बहुत बड़ीक्रांति की। इस क्रांति से फ्रांस की एकाधिकार शाही खत्म रखने के तथा सामाजिक समता के विचार सामने आए। इस क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस में मध्यवर्ग के विकास को बहुत बड़ी गति मिल गई। विदेशियों के भारत आगमन से भारतीय समाज पर भी इसका असर हुए बिना नहीं रहा।

वर्ग विकास की दृष्टि से भारत का इतिहास हम देखें तो हमें दिखाई देगा कि प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था स्यवसायों के आधार पर अस्तित्व में आई थी। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र- चार वर्णों में संपूर्ण समाज विभाजित हो गया था। चार वर्णों के अपने-अपने कर्म निश्चित हुए थे। यथा-

ब्राह्मण:-

अन्य तीन वर्णों में ब्राह्मण श्रेष्ठ माना जाता था। उसका प्रधान कार्य था- पूजा-पाठ, वेदपाठ करना, पढ़ना-पढ़ाना और अपने इस धर्म का पालन करते हुए मोक्ष प्राप्त करना। अन्य वर्णों के लोगों की अपेक्षा ब्राह्मण का महत्त्व अधिक बढ़ गया था।

क्षत्रिय :

क्षत्रिय शूरवीर, संयमी और पराक्रमी होने के कारण सैनिकी और प्रशासकीय कार्यों से संनध्द थे। अपने देश और समाज की रक्षा करना उनका प्रधान कर्तव्य था।

वैश्य :

वैश्यों का प्रधान कार्य था व्यापार करना। इसी के साथ-साथ कृषि, उदयोग तथा पशुपालन आदि धंधे करके समाज की जरूरतों के पूरा करना वैश्यों का ही कार्य था।

शूद्र :

उपर्युक्त तीनों वर्णों का कार्य करने में जो व्यक्ति असमर्थ थे वे शुद्र कहलाए जाते थे। उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा करना शुद्र का कार्य बन गया था।

१८वीं या १९वीं शताब्दियों में या उसके पूर्व काल में भारत में मध्यवर्ग नहीं था सो बात नहीं। परंतु तत्कालीन सारा समाज प्राय:दो वर्गों में ही विभाजित था-एक वर्ग था उच्च और दूसरा था निम्न। निम्नवर्ण शोषण की चक्की में पिसा हुआ था। जीवन की खुशियों और सुखों से वंचित था। दिन-रात खून-पसीना एक करके भी यह दो जून रोटी नहीं पाता था। दूसरी ओर उच्चवर्ग था जो कि सुख-सुविधाओं के साधनों से परिपूर्ण और विलासपूर्ण जीवन बिताता था। उन्नीसवीं शताब्दी में देश में एक ओर अंग्रेजी शासन की जडे मजबत हो गई तो दूसरी ओर शिक्षा में एक ओर अंग्रेजी शासन की जड़े मजबूत हो गई तो दूसरी ओर शिक्षा के प्रसार की लहर तेजी से फैल गई।

जैसे-जैसे अंग्रेजी साम्राज्य की जड़े मजबूत होती गई, वैसे-वैसे देश में स्थित सामंतवादी व्यवस्था का अस्त और पूंजीवादी व्यवस्था का उदय एवं विकास होता गया। समाज में पूंजीपति और श्रमिक वर्ग के बीच एक तीसरा वर्ग विकसित हुआ, जिसे आज मध्यवर्ग कहा जाता है। सन १८५७ के स्वतंत्रता-संग्राम के पश्चात संपूर्ण देश में पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का फैलाव हुआ। शिक्षा का प्रसार, औदयोगिकीकरण, रेल, ड़ाक जैसी सुविधाओंने अज्ञान और अंध-परंपराओंको तोड़ दिया और ऐसे ऐसे वर्ग 'मध्यवर्ग' है। यह एक ऐसा वर्ग है जिसके सदस्य अलग-अलग जाति, अलग-अलग धर्म और अलग-अलग प्रांत के होते हुए भी विचार, महत्त्वाकांक्षा और आदर्श की दृष्टि से समान है।

अँग्रेजों का भारत आगमन,'ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना करना, भारत का शासनकर्ता बन जाना, १८५७ का स्वतंत्रता का पहला असफल संग्राम कारखानों, रेल, डाक, तार, शिक्षा, विज्ञान आदि का प्रसार से लेकर संसार का प्रथम द्वितीय विश्वयुद्ध और भारत को आजादी की प्राप्ति तक की सारी स्थितियों ने भारतीय समाज में मध्यवर्ग के विकास में बहुत बड़ा सहयोग दिया। एक लंबी दासता के उपरांत भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र भारत की सरकार ने शिक्षा का स्त्रोत देहातों तक पहुँचाया, छोटे-छोटे उदयोगों की प्रगति को बढ़ावा दिया, सारे देश की उन्नति के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बना लीं, कृषि सुधार की ओर विशेष ध्यान दिया, परिणामस्वरूप मध्यवर्ग की संख्या बढ़ती गई। स्वतंत्र भारत का यह महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि मध्यवर्ग का फैलाव बहुत बड़ी मात्रा में असंतुलित हुआ है। शिक्षा, नौकरी, व्यापार, कृषी हर क्षेत्र में इस वर्ग के व्यक्ति पाए जाते हैं। शेष दो वर्ग की तुलना में मध्यवर्गीय लोगों की संख्या में दिन-ब-दिन वृध्दि होती जा रही है।

संदर्भ:

१. Middle class, the class of society between upper and the 'Lower class'दि कम्पैक्ट एडिशन ऑफ दि ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्श्नरी: पृ.१७९०
२. चैम्बर्स ट्वेंटिथ सेंचुरी डिक्शनरी: पृ. ६७२
३. एनसायक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल सायंसेज:पृ. ४०७

४. सं.रामचंद्र वर्मा : मानक हिंदी कोश, पृ. २८४
५. सं.धीरेंद्र वर्मा : हिंदी साहित्य कोश, भाग-१, पृ. ६१२
६. गोविंदसदाशिव धुर्ये:जाति,वर्ग और व्यवसाय,पृ. २६४
७. डॉ.लाजपतराय गुप्त : बीसवीं शताब्दी के हिंदी नाटकों का समाज शास्त्रीय अध्ययन, पृ.२८
८. भूपसिंह भूपेंद्र - मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास, पृ. १२
९. डॉ. अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन।
१०. भूपसिंह भूपेंद्र - मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास।
११. डॉ.हेमराज निर्मम- हिंदी उपन्यासों में मध्यवर्ग।

इसुफअल्ली महमंद शेख
शोध–छात्र–पीएच.डी. , सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर.